अविस्मरणीय महाशिविर

- तीन दिवसीय शिविर में 2960 गाँवों से 21,729 स्वयंसेवक उपस्थित ।
- संत समावेश में विभिन्न मठों से 162 संत उपस्थित ।
- पूरे राज्य को संचारित कर दिया भव्य पथसंचलन ने ।
- अनुशासन एवं अनुशीलन का साक्षी बना संघ शिविर ।
- मनमोहक प्रदर्शनी, तारिहाल मे रचा इतिहास ।

पुंगव

विशेष अंक

हिन्दु शक्ति संगम ⌘ 27, 28, 29 जनवरि 2012 ⌘ हुबली-उत्तर कर्नाटक

उत्तर कर्नाटक में हिन्दू लहर

आत्मविश्वास का नया पर्व

उत्तर कर्नाटक प्रान्त में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लिए यह ऐतिहासिक पर्व था जब हिन्दू शक्ति संगम की सफलता ने अपेक्षित सीमा रेखा को भी पार कर लिया। वास्तव में हिन्दू शक्ति संगम ने इतिहास रच दिया। 27 से 29 जनवरी तक आयोजित तीन दिवसीय शिविर में 2960 गाँवों से 21,729 स्वयंसेवकों ने भाग लिया। तारिहाल के 120 एकड़ क्षेत्र में बसाए गए इस शिविर की विशेषता यह थी,यह अनुशासन और अनुशीलन का त्योहार स्थल बन गया था। तीसरे दिन सार्वजनिक समारोह में 2 लाख से अधिक लोगों ने भाग लिया। देश के ऐतिहासिक व्यक्तियों योद्धाओं के नाम से बसाए गए 16 नगर, उत्तम मार्गों और स्नानघरों, शौचालयो के निर्माण का कार्य स्वयंसेवकों ने दिन रात एककर एक माह में पूरा किया। थोड़े से समय में इतना बड़ा काम स्वयंसेवकों के लगन, समर्पण और अनुशासन से ही पूरा हुआ।16 नगरों मे करीब दो हजार स्वयंसेवक रहते थे । दिनचर्या की शुरुआत प्रातः 4.45 से होती थी और रात्रि 10.15 तक चलती थी। अनुशासित जीवन का रूप यहां देखने को मिला जब हर स्वयंसेवक सुबह उठने के बाद समयानुसार हर काम को पूरा करता था। उपाहार, भोजन, शौच, स्नान एवं व्यायाम का निश्चित समय था। किसी के लिए कोई भ्रम की स्थिति नहीं थी।

> हिन्दु शक्ति संगम ने उत्तर कर्नाटक में संघ की गतिविधियों को एक नई दिशा दी है। कार्यकर्ताओं में आत्मविश्वास जगाया है ।

इस हिन्दू शक्ति संगम ने उत्तर कर्नाटक प्रांत में संघकार्य को एक नई दिशा दी है, कार्यकर्ताओं में उत्साह एवं आत्मविश्वास का संचार कर दिया है। तेरह जिलों से आए हुए 21,729 स्वयंसेवकों ने शिविर मे भाग लेकर एक नई मिसाल कायम की।

यहां यह विशेष उल्लेखनीय है कि सभी स्वयंसेवक उत्तर कर्नाटक के 1960 गाँवों से आए थे। शिविर में आए स्वयंसेवकों में 80 प्रतिशत युवा और 60 प्रतिशत नए थे। ये सभी संघ की शक्ति समृद्धि के लिए ही भाग लेने आए थे।

शिविर में संत सम्मेलन, मातृ सम्मेलन एवं गण्यमान्य लोगों से संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। समाज के प्रबुद्ध एवं गण्यमान्य व्यक्तियों ने विभिन्न कार्यक्रमों मे शामिल होकर संघ की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए साथ देने का मन बनाया है।

इस शिविर मे भाग लेकर इन सभी प्रतिनिधियों ने ने संघ आशय के साथ काम करने का मन बनाया हैं ।

45 लाख लीटर क्षमता वाले एक कृत्रिम तालाब सबके आकर्षण का कारण बन गया था । अगले वर्ष आन्ध्र प्रदेश में ऐसे ही एक शिविर के आयोजन के सन्दर्भ में वहां से वरिष्ठ स्वयंसेवकों का एक दल शिविर की व्यवस्था को देखने के लिए आया था। शिविर परस्पर परिचय, मित्रता और आपसी आदान प्रदान का स्थल बन गया था। मोबाइल नम्बर से लेकर घर का पता तक लोग आपस में ले दे रहे थे। शिविर में आए हुए जिन लोगों को संघ और संघकार्य की जानकारी नहीं थी उन्हें यहां के वातावरण ने राष्ट्रभक्त बना दिया। लोग नारा लगाने लगे, 'देश की रक्षा हम करेंगे, हम करेंगे।' और लोग इस संकल्प के साथ अपने घरों को वापस लौटे कि वे अपने परिश्रम से संघ कार्य को तेजी से बढ़ाएंगे।

शीलयुक्त समाज निर्माण ही संघ का लक्ष्य

सरसंघचालक का समापन वक्तव्य

मोहनजी भागवत
आर.एस.एस सरसंघचालक

- शक्ति की आराधना भूलने के कारण ही हजार वर्षो तक हमें गुलाम रहे। समाज में शक्तिवर्धन कर समाज को संगठित करने का काम राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कर रहाहै। चरित्रवान, सभ्य समाज निर्माण ही संघ का लक्ष्य हैं ।
- हमारा हिन्दू राष्ट्र है। हम सब हिन्दू हैं,यह भावना सदा जागृत रहनी चाहिए । इस राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधे रखना मात्र हिन्दुत्व के सिद्दांत से ही संभव है । यह देश हमारे लिए मात्र एक माटी दुकड़ा नहीं है । यहाँ की मिटटी के कण-कण में भी हमने मातृत्व पाया हैं । मातृभूमि के प्रति गर्व, पूर्वजों और संस्कृति प्रति जो श्रद्धा रखते हैं वही हिन्दू हैं।
- संघ कार्यों को प्रचार की जरूरत नहीं हैं । देश के हित के लिए स्वयंसेवक कार्य करते हैं। देश की किसी भी हिस्से में प्राकृतिक आपदा के समय सेना या पुलिस बल से पहले स्वयंसेवक पहुंचकर राहत कार्य में लग जाते हैं। लगभग डेढ़ लाख सेवा गतिविधियों के संघ चुपचाप सामाजिक परिवर्तन में लगा है।
- संघ भ्रष्टाचार के विरुद्ध है। भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन का संघ समर्थन करता है। यदि समाज का प्रत्येक व्यक्ति चरित्रवान होगा तो समाज में तो भ्रष्टाचार पनपेगा ही नहीं। इसलिए चरित्रवान समाज का निर्माण करना चाहिए ।

संघ का अनुशासन प्रंशसनीय है

■ भारत ने अपने हवाई मारक क्षमता का प्रदर्शन दुनिया के समक्ष किया हैं । हमारे अन्दर प्रतिभा या सामर्थ्य की कोई कमी नहीं है। नहीं है । हरितक्रांति के बाद सैनिक तकनीकी में विकास के बाद इस समय भारतीय 90 प्रतिशत तक स्वावलम्बी हो गए हैं। इस शिविर का वातावरण, स्वयंसेवकों का अनुशासन प्रशंसनीय है।

लेफ्टिनेंट जनरल डॉ वी.जे.सुन्दरम
(प्रक्षेपास्त्र वैज्ञानिक)
(सार्वजनिक सभा में अध्यक्षीय भाषण देते हुए)

विश्वरूप दर्शन

■ विशाल हिन्दू शक्ति संगम में संगठित शक्ति के विश्वरूप का दर्शन हो रहा है। भारत हमारी जन्मदात्री हैं । देश में अन्त- बाह्य समस्याओं के संकट के समय हमें संगठित रहना चाहिए । अनेकता में एकता की जरूरत है। संगठित शक्ति से ही देश की समस्याओं को हल किया जा सकता है ।

पेजावर मठाधीश श्री विश्वेश्वर स्वामीजी

■ मातृभूमि की सेवा से बढ़कर और कोई सेवा नही हैं धर्म और संस्कृति इस जमीन की श्वास है । उसकी रक्षा के लिए हमें कटिबद्ध रहना-चाहिए । अस्पृश्यता एवं धर्मांतरण हिन्दु धर्म पर लगा शाप है । उसे जड़ सहित उखाड़ने के लिए हमें प्रयत्नशील होना चाहिए । संघ कार्य से आज समाज प्रभावित है । हुबली के पथसंचलन ने एक स्फूर्ति दी है। ऐसा लग रहा है कि भारत की शक्ति यहाँ समाहित हे गई है ।

- श्री गुरुसिद्धराजयोगेन्द्र स्वामीजी
मूरुसाविर मठ

संघ के घोष प्रदर्शन ने जन-मन को मोह लिया । लगभग 1600 घोष स्वयंसेवकों ने विविध वाद्यों का वादन किया ।

पथ संचलन

28 की शाम 5.32 का समय हुबली के चेन्नम्मा चौराहे पर वह एक ऐतिहासिक क्षण । तीन समूहों में आए हुए स्वयंसेवकों का आकर्षक पथसंचलन के उस अपूर्व संगम ने हजारों लोगों में रोमांचित कर दिया । शाम 4.45 को नेहरू मैदान, गंगाधर हांकी मैदान तथा अम्बेडकर मैदान से निकले पथसंचलन पर रास्ते भर में आम नागरिकों ने पुष्प वर्षा कर स्वागत किया, गगन भेदी देश भक्ति घोषणाओं से पूरे नगर में देशाभिमान का वातावरण बन गया।

युगदृष्टि प्रदर्शनी

देश,संस्कृति तथा संघ की विकास गाथा को प्रतिबिम्बित करनेवाले युगदृष्टि प्रदर्शनी में आम लोगों ने आश्चर्यजनक प्रतिक्रिया व्यक्त की। कला, विज्ञान, साहित्य, खेलकूद, संत परंपरा, संघ सेवा कार्य सहित प्राचीन भारत की प्रतिष्ठा पूर्ण जानकारियों को विभिन्न शैली में दर्शकों के सामने पेश किया गया। इस प्रदर्शनी ने दर्शकों में देशभक्ति जगाई। संघ विकास से संबंधित वीडियो प्रदर्शन को दर्शकों ने सराहा । कठपुतली के माध्यम से विजयनगर के वैभव को दिखाने वाले खेल ने तो जन-मन को मोह लिया । काफी प्रयास से आयोजित की गई यह प्रदर्शनी ज्ञानवर्धक साबित हुई।

■ परिश्रमपूर्वक बनाई गई यह प्रदर्शनी ज्ञानवर्धक है । इस प्रदर्शनी का प्रभाव तब और भी बढ़ जाता जब यह हिन्दी और अंग्रेजी में अनुवाद कर प्रस्तुत किया गया होता तो पूरे विश्व के हिन्दुओं को प्रेरित करता।

-मोहनजी भगवत
सरसंघचालक का प्रदर्शनी के बारे में उद्गार ।

युग दृष्टि प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हिन्दुस्तानी विधा के प्रख्यात गायक पं. एम. वेंकटश कुमार।

■ भगवान कितना कंजूस है मात्र दो आँखें ही दी। इस प्रदर्शनी को देखने के लिए कई आंखों की जरूरत है।

- शांताबाई जोशी (एक गृहिणी)

■ अचानक मैं शिविर देखने आया, देश तथा संस्कृति का अद्भुत ज्ञान मुझे मिला।

- नदाप नवलगुंद

■ भारत को मैने कितना देखा, देखने के लिए कितना बाकी है ? यह प्रर्दशिनी देखने के बाद मुझे मालूम हुआ।

- अर्चना पै (छात्रा)

■ शिविर में आने के बाद यहां एक अद्भुत भारत देखा। हजारों वर्ष के वास्तविक इतिहास का मूल रूप,भविष्य के भारत की कल्पना, सैकड़ों विषय, युवाओं को राष्ट्रभक्ति के लिए प्रेरित करने वाली,गुरुजी गोलवल्कर के संदेश सहित यहां सब कुछ मौजूद है। इन सभी तथ्यों को सभी भारतीयों को अनुभव करना चाहिए। यह सब अद्भुत । प्रत्येक भारतीय को भी अनुभव योग्य बातें हैं। ऐसे कई तथ्य जो एक सामान्य व्यक्ति को समाज का मजबूत आधार बना सकता है।

डी.वी. सदानंद गौड, मुख्यमंत्री, कर्नाटक

शिविर की विशेषताएँ

- तीन दिवसीय हिन्दू शक्ति संगम में उत्तर कर्नाटक के 13 जिलों के 1960 गाँवों से 21,729 स्वयंसेवक शिविर में भाग लिया।
- युगदृष्टि-प्रदर्शनी एक लाख से अधिक लोगों ने देखा।
- 26 जनवरी की रात को हम्पी के विरूपाक्ष मंदिर से निकली विजयज्योति, अंजनाद्री पहाड़ी से हनुमान ज्योति तथा चिक्कोडी से केशवज्योति - इन तीन ज्योतियाँ शिविर स्थलें पहुंचीं। हनुमत ज्योति - विज्य ज्योति को लाने वाले आठ युवा इसाई बन गए हैं। तीन दिनों तक शिविर में भाग लेकर वे हिन्दुत्व की विशेषता को समझ गए ।
- 27 जनवरी की रात को जब जलापूर्ति करने वाली पाईप टूटी तो किसी को पता लगने के पहले ही कुछ अनुभवहीन स्वयंसेवकों ने पूरी रात काम करके उसे ठीक किया। दहशत और चिंता के लिए वहां कोई जगह नहीं थी। सुबह सब को आसानी से जलापूर्ति की गई।
- 28 की रात को एकबार पुनः आतंक का वातावरण पैदा हुआ। जब मुख्यापाकशाला के रसोइए सब्जी बनाने में असफल हो गए। लेकिन वहां उपस्थित स्वयंसेवकों ने असम्भल को फिर सम्भव कर दिखाया। रसोई की जिम्मेदारी निभाने वाले स्वयंसेवकों ने अपनी वैयक्तिक कार्य को छोड़कर काम में लग गए। केवल 6 कुन्तल सब्जी ही बचा था, भोजन भी सभी के लिए नहीं होता। परन्तु 19 कुन्तल की व्यवस्था की गई और सुबह सभी के लिए भोजन तैयार मिला।
- रंगोली शिविर के आकर्षण का केन्द्र बन गया था। रंगोली बनाने के लिए 5 कुन्तल रंगोली पावडर और 3 कुन्तल रंग का उपयोग किया गया। 11लोगों ने जिनमें 10 महिलाओं ने 34 घंटे में रंगोली बनाई। पहले दिन 16 घंटे, दूसरे दिन 12 गंटे रंगोली सजाने में लगा। उनकी क्षमता, और बिना दिन रात देखे जिस तरह से परिश्रम किया वह सबके लिए प्रेरणास्रोत बन गया।
- होलीगे (पुआ) संग्रह भी एक रिकार्ड है । हुबली, धारवाड और नवनगर के 12500 घरों से 1,34,472 होलीगे संग्रह किया गया। पूरे शहर में 25 महिलाएँ मिलाकर 175 कार्यकर्ता होलीगे संग्रह में लगे थे।
- कुमुटा के पूज्य प्रज्ञानन्द सरस्वती स्वामीजी सभी शिविरार्थियों के साथ डेरा में ही निवास किया।

- देश-विदेश में रहने वाले लोगों के लिए शिविर के समापन समारोह के सीधे प्रसारण की व्यवस्था 6 वेवसाईट के द्वारा की गई थी। सीधे प्रसारण देखने वालों की कुल संख्या 42 हजार ।
- समारोह के सीधे प्रसारण की व्यवस्था करनेवाले बेंगलूर स्थित कम्पनी के मालिक समारोह देखकर इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने प्रसारण का खर्चा लेने से मना कर दिया यद्यपि उनसे काफी अनुरोध किया गया।
- शिविर का समाचार संकलन करने आए पत्रकार अपने परिवार को भी लेकर आए। ध्यान देने योग्य रही ।
- वह अविस्मरणीय क्षण था जब बागलकोट जिला के मुधोल तालुक के नागराल ग्राम के पोलियोग्रस्त 25 वर्षीय श्रीकान्त ने एक पैर से ही 180 किलो मीटर सायकिल चलाकर शिविर स्थल पर पहुंचे।

पुंगव PUNGAVA

74, Ranga Rao Road,
Shankarapuram, Bangalore - 560 004.
website : www.samvada.org

संत सम्मेलन

शिविर के तीसरे दिन संत सम्मेलन हुआ । उत्तर कर्नाटक के विभिन्न मठों-संस्थाओं से 162 संतों ने संगोष्ठी में भाग लिया । हिन्दू समाज को प्रभावित करने वाली कई समस्याओं पर विचार कर आवश्यक सुधार किए जाने की चर्चा हुई। मठाधीशों द्वारा भक्तों को मन्त्र दीक्षा के साथही देशभक्ति की दीक्षी भी दी चाहिए। जाति-मत-पन्थ को भूलकर देश के बारे में चिंतन करना चाहिए। कुछ वरिष्ठ स्वामी जी ने कहाकि हम (स्वामीजी को) देश के लिए कुछ योगदान करने की जरूरत है। अध्यक्षता करते हुए सरसंघचालक मोहन भागवत ने कि बहु संस्कृति प्रधान देश भारत में समरसता की कमी दिखाई देती है । देश की एकता व प्रगति के लिए एक होकर काम करना चाहिए । मतान्तरित बन्धुओं को वापस मातृ धर्म में लाने की जरूरत है । इस दिशा में सभी मठाधीशों को संघ के साथ जुड़ना चाहिए, देश कार्य में अग्रणी बनना चाहिए ।

प्रमुख व्यक्तियों के साथ संवाद

जनवरी 29 रविवार के दिन हुए संवाद कार्यक्रम मे करीब 2000 हजार प्रमुख नागरिक एकत्रित हुए। जिसमें ईसाई,मुसलिम मत के प्रमुख व्यक्ति भी शामिल थे । इस कार्यक्रम मे कश्मीर, धर्मांतरण के बारे में चर्चाएं हुई, कार्यक्रम में विचार व्यक्त करते हुए रा.स्व.संघ के सरकार्यवाह सुरेश (भैयाजी) जोशी ने कहा, सदियों से गरीबों और दीनदलितों के पूर्ण रूप से उत्थान के लिए अवसर नहीं प्रदान नहीं किया गया,आज भी उनका शोषण किया जा रहा है। इन्हीं कारणों से मतान्तर की घटनाएं बढ़ रही हैं। हम लोग स्वयं ही इस समस्या के कारण हैं। हमें मतान्तरण को रोकने की ओर ध्यान देना चाहिए और मानवीय भावनाओं को मजबूत करना चाहिए। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समाज के हर वर्ग के समर्थन की आवश्यकता है, हमारे साथ हाथ मिलाएं। उनके इस निवेदन पर, प्रतिक्रिया सकारात्मक रही।

मातृ समावेश

शिविर में आयोजित तीन विभिन्न संगोष्ठियों में 3500 से भी अधिक महिलाएँ उपस्थित रहीं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सहसर कार्यवाह दत्तात्रय होसबाले, वरिष्ठ प्रचारक एन. कृष्णप्पा एवं एस. रामण्णा ने गोष्ठियों को सम्बोधित किया।

कलाकार बी.के.एस. वर्मा के कलायुक्त अत्याकर्षक मंच तथा उस पर शिविर का उद्देश्य व्यक्त करनेवाला भारत वर्ष का भव्य नवोदय, शक्ति संगम की इच्छा। हम ज्ञान, चरित्र, एकता, बंधुत्व एवं मित्रता से विश्व विजयी होंगे। घोषणा के सार ने शिविर को स्मृति में हमेशा के लिए निहित कर दिया है।

पुलकित अनुभव

हजारों स्वयंसेवको को एक ही समय में एक ही गणवेश में देखना गर्व का विषय है । मुझे इस बात ने आत्मविश्वास से भर दिया कि मेरी तरह ही बहुत सारे स्वयंसेवक है जो संघ की शाखा चलाते हैं। मुझे तब यह महसूस हुआ जब मैंने उनमें से कईयों को सरसंघचालक की अध्यक्षता वाली बैठक में देखा। अद्वितीय हिन्दू शक्ति संगम,ने संघके विराटरूप को प्रस्तुत किया।

-सिन्धूर उमेशजोशी, बेलगाम

शिविर की विशेषताएँ

शिबिर के लिए 4 लाख से भी अधिक रोटियाँ संग्रहित ।

- शिविर का व्यक्तिगत रूप से अनुभव हासिल करने की दृष्टि से बेलगाम के मूल निवासी विजय रुयीकर, अमेरिका के क्यालिफोर्निया से, सऊदी अरेबिया से दिलीप मजुदार आए थे ।
- जमखण्डी तालुक के जंबगी नामक एक छोटे गाँव से 221 स्वयंसेवक शिविर में भाग लेने आए थे।
- 28 को जब अभूतपूर्व पथ संचलन शहर के एक कोने में होता रहा तो दूसरे कोने में हुबली के प्रांत कार्यालय केशवकुंज में सायं शाखा नरेन्द्र चल रहा था। पथसंचलन में भागलेने के बाद कार्यालय में पहुंचे संघ के एक वरिष्ठ, ने पूछा जब पथ संचलन चल रहा था तो आप लोग यहां शाखा क्यों चला रहे हैं, यह सुनकर वहां शाखा चला रहे किशोर स्वयंसेवक ने बड़े ही आदर से कहा कि शाखा तो प्रतिदिन लगनी चाहिए क्या यह सही नहीं है। और हम शिविर के लिए अपेक्षित भी नहीं हैं। स्वयंसेवक के लिए कर्तव्य पहले है।

45 लाख लीटर की क्षमतावाला कृत्रिम तालाब

- समापन समारोह के मुख्य अतिथि ले.ज. डॉ बी.जे सुन्दरम घोष वादन को देखने के लिए घोष पथक की ओर आए। घोष वादन सुनकर उत्साह से भर गए। जब उन्हें यह पता चला कि सभी वादक अपने-अपने वाद्यों को खुद लेकर आए हैं तो उनके मुंह से निकल पड़ा, 'ओह माई गॉड मुझे विश्वास ही नहीं होता।' (हे भगवान! मुझे इस पर विश्वास नहीं हो रहा है।)
- प्रदर्शनी में प्रदर्शित संघ विकास पर वीडियो साक्षचित्र चार दिनों में 74 बार प्रदर्शित हुआ । 20,000 से ज्यादा लोगों ने इसे देखा । शिबिर के बारे में समाचार व चित्रों को बार-बार वेबसाईट में दिया जाता था ।
- तीन दिनों में वेबसाईटों व सामाजिक साईटों के जरिए शिविर की जानकारी लेनेवालों की संख्या करीब 2 लाख ।
- चक्रवात के प्रभाव से-शिविर में एक-दो टेन्ट गिर पड़े । लेकिन कुछ ही क्षणों में स्वयंसेवकों ने उसे लगा दिया।
- शिविर की तैयारी एवं तीन दिवसीय शिविर में एक करोड़ पानी उपयोग किया गया।
- तीन दिन की शिविर में 22 हजार दोपहिए और कार की पार्किंग हुई।
- तीन दिनों में भारी संख्या में राष्ट्रीय विषयों से सम्बंधित साहित्य की बिक्री हुई।
- देश-विभाजन के समय रा.स्व. संघ के कार्यकर्ताओं द्वारा किए गए कार्यों पर प्रकाश डालने वाली कन्नड पुस्तक 'बेलगिदरु प्राणदीपादारति' (हमारे प्राण बचाए)विमोचन किया गया।

के.एस. नागराज, नं. 74, रंगराव मार्ग, बेंगलूरु-560 004 द्वारा संपादित एवं प्रकाशित
राष्ट्रोस्थान मुद्रणालय बेंगलूरु-560 019 से मुद्रित।

For Private circulation only